हिंदी दैनिक

न्यूज़ वायरस

वर्ष : 12 अंक : 48 देहरादून, बुधवार, 09 अगस्त, 2023 मूल्य : एक रुपया पृष्ठ : 08

डॉ. पंकज पांडे की टीम पीडब्ल्यूडी ने जितेंद्र त्रिपाठी के नेतृत्व में देहरादून की क्षतिग्रस्त सड़कों पर ट्रैफिक हुआ बहाल 8

मुख्यमंत्री ने वितरित किया तीलू रौतेली एवं आंगनबाड़ी कार्यकत्री पुरस्कार

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून, 9 अगस्त, मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने राज्य स्त्री शक्ति तीलू रौतेली पुरस्कार एवं आंगनबाड़ी कार्यकत्री पुरस्कार 2022-23 प्रदान किये। इस वर्ष 14 महिलाओं को राज्य स्त्री शक्ति तीलू रौतेली पुरस्कार एवं 35 महिलाओं को आंगनबाड़ी कार्यकत्री पुरस्कार प्रदान किया गया। सभी पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को 51-51 हजार रूपये की धनराशि उनके खाते में डिजिटल हस्तांतरित की गई

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि विभिन्न क्षेत्रों में सराहनीय कार्य करने वाली मातृशक्ति को सम्मानित कर वे स्वयं गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि वीरांगना तीलू रौतेली ने 15 वर्ष की उम्र में युद्ध भूमि में अपने रण कौशल द्वारा अपने विरोधियों को परास्त किया था। अपूर्व शौर्य, संकल्प और साहस की धनी वीरांगना तीलू रौतेली को उत्तराखंड की झांसी की रानी कहकर याद किया जाय तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। उन्होंने 15 से 22 वर्ष की आयु के मध्य सात युद्ध लड़े और अपनी वीरता और रण कौशल का परिचय दिया। राज्य सरकार ने तीलू रौतेली पुरुस्कार की धनराशि 31 हजार रुपए से बढ़ाकर 51 हजार रुपए की है, जबकि आंगनबाड़ी कार्यकत्री पुरुस्कार की धनराशि भी 21 हजार से बढ़ाकर 51 हजार रुपए की गई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आंगनबाड़ी केंद्रों की स्थिति मजबूत करने के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है और इस दिशा में निरंतर कार्य कर रही है। माता-पिता के बाद बच्चों को संस्कार देने की शुरुआत आंगनबाड़ी केंद्रों से ही होती है। राज्य सरकार द्वारा आंगनबाड़ी बहनों का मानदेय 7500 रुपए से बढ़ाकर 9300 रुपए किया है। मिनी आंगनबाड़ी बहनों के मानदेय को भी 4500 से बढ़ाकर 6250 और सहायिकाओं का मानदेय 3550 से 5250 रुपए किया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तराखंड के विकास के लिए हर क्षेत्र में मातृ शक्ति की

- 14 महिलाओं को राज्य स्त्री शक्ति तीलू रौतेली पुरस्कार
- 35 महिलाओं को आंगनबाड़ी कार्यकत्री पुरस्कार

बड़ी भूमिका रही है। उत्तराखण्ड को अलग राज्य बनाने की मांग हेतु हुए आंदोलन में सबसे बड़ा बलिदान हमारी मातृशक्ति ने ही दिया था। आज महिलाएं किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं हैं, चाहे घर हो या युद्ध का मैदान, राजनीति हो या सिनेमा, वैज्ञानिक क्षेत्र हो या कृषि, शिक्षा और अनुसंधान का क्षेत्र महिलाओं ने हर जगह अपने आपको साबित किया है। आज प्रदेश के सुदूर गांवों में महिलाएं सेल्फ हेल्प ग्रुप बनाकर कुटीर उद्योगों के जरिए ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति प्रदान कर रही हैं। महिलाओं के पास कौशल की कभी कोई कमी नहीं रही और अब यही कौशल उनकी और उनके परिवारों की आर्थिकी को बल प्रदान कर रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार ने प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं को सशक्त बनाने का कार्य किया है। आज

वित्तीय समावेश से लेकर सामाजिक सुरक्षा, गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा से लेकर आवास, शिक्षा से लेकर उद्यमिता तक नारी शक्ति को भारत की विकास यात्रा में सबसे आगे रखने के लिए कई प्रयास किए गए हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण की दिशा में अनेक कार्य किये जा रहे हैं। लखपति दीदी योजना, मुख्यमंत्री महालक्ष्मी योजना, उज्ज्वला योजना, हर घर नल से जल, शौचालयों का निर्माण, महिला स्वयं सहायता समूह के लिए विशेष कोष का गठन जैसे अनेक कार्य किये गये हैं। आज प्रदेश की समस्त माताओं और बहनों ने अपने अथक परिश्रम से जहां एक ओर आर्थिक रूप से अपने आपको आत्मनिर्भर बनाने का कार्य किया है वहीं देवभूमि की सभ्यता और संस्कृति को भी जीवंत रखा है।

महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास मंत्री रेखा आर्या ने कहा कि तीलू रौतेली के जन्मदिवस के सुवअसर पर आधुनिक तीलू रौतेली व आंगनबाडी कार्यकत्रियों का सम्मान किया जा रहा है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा महिला सशक्तीकरण के लिए राज्य में लगातार प्रयास किये जा रहे हैं। दोनों पुरुस्कारों की धनराशि बढ़ाई गई है। उन्होंने कहा कि सामाजिक भेदभाव समाप्त कर ही समाज में महिलाओं की तरक्की सुनिश्चित हो सकती है। उन्होंने तीलू रौतेली एवं ऑगनबाड़ी पुरूस्कार प्राप्त करने वाली महिलाओं को बधाई दी।

पर्वतीय क्षेत्रों में पानी की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए : मुख्य सचिव

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून 9 अगस्त, मुख्य सचिव डॉ. एस. एस. संधु ने जल जीवन मिशन के तहत हो रहे कार्यों की प्रगति की समीक्षा की। मुख्य सचिव ने कहा कि यह भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एक महत्वपूर्ण योजना है जिसे निर्धारित समय सीमा के अंदर पूर्ण किया जाना है।

उन्होंने कहा कि प्रदेशभर में विशेषकर दूरस्थ और पर्वतीय क्षेत्रों में पानी की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए, इसके लिए हम सबको इस योजना को सफल बनाने को दिशा में काम करना है।मुख्य सचिव ने कहा कि यदि कहीं योजना पूर्ण होने के बावजूद 55 एमएलडी पानी नहीं मिल पा रहा है तो नए प्रस्ताव भेजे जाएं। जिन जनपदों ने इस दिशा में अच्छा कार्य किया है उन्हें बधाई देते हुए मुख्य सचिव ने कहा कि अन्य जनपदों

को भी इस दिशा में कार्य करने की आवश्यकता है। उन्होंने यूपीसीएल को योजना के लिए विद्युत कनेक्शनों को शीघ्र उपलब्ध कराए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने वन भूमि हस्तांतरण मामलों को भी लगातार निस्तारित किए जाने के निर्देश दिए।

मुख्य सचिव ने जल स्रोतों को बनाए रखने हेतु भी कार्य किए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने जल स्रोतों को रिचार्ज करने हेतु चेक डैम और रिचार्ज पिट सहित वनीकरण आदि कार्य लगातार संचालित किए जाने के निर्देश दिए। कहा कि योजना के दीर्घकालीन संचालन के लिए जल स्रोतों को बनाए रखना अतिआवश्यक है।

मुख्य सचिव ने योजनाओं के संचालन और रखरखाव पर भी विशेष बल दिए जाने के निर्देश देते हुए कहा कि स्थानीय लोगों को प्लंबर और फिटर आदि का प्रशिक्षण उपलब्ध कराए जाने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। उन्होंने कार्यों की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिए जाने के निर्देश दिए। मुख्य सचिव ने कार्यों को निर्धारित समय में पूर्ण किए जाने हेतु मैन पावर बढ़ाए जाने के साथ ही जिलाधिकारियों को लगातार समीक्षा किए जाने के निर्देश भी दिए। इस अवसर पर सचिव अरविंद सिंह ह्यांकी सहित सम्बन्धित उच्चाधिकारी उपस्थित थे।

क्या च्युइंग गम चबाने से कम होती है चेहरे की चर्बी

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट 09 अगस्त : च्यूइंग गम चबाना कई लोगों की लोकप्रिय आदतों में से एक है, जिसे लोग विभिन्न कारणों से अपनाते हैं। कुछ लोग ताजी सांस के लिए च्युइंग गम चबाते हैं, तो कुछ लोग अपनी भूख को कम करने के लिए या सिर्फ मनोरंजन के लिए ऐसा करते हैं, लेकिन क्या च्युइंग गम सचमुच वजन घटाने में मदद कर सकती है? इस आर्टिकल में, हम पता इसी बात का लगाएंगे कि क्या च्युइंग गम वास्तव में वजन कम करने में आपकी मदद कर सकती है या नहीं।

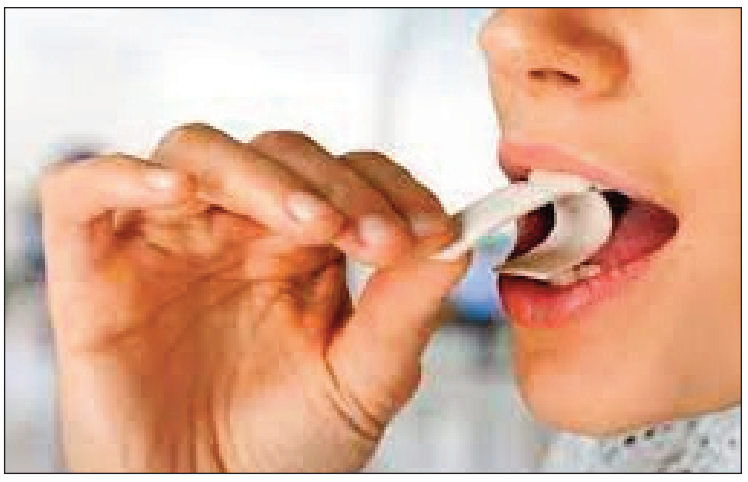

जब आप च्युइंग गम चबाते हैं, तो इसके लिए आप लगातार अपना जबड़ा हिलाते रहते हैं, जिससे आपकी कैलोरी बर्न बढ़ सकती है। हालांकि, कैलोरी व्यय में वृद्धि न्यूनतम है, फिर भी यह समय के साथ वजन घटाने में योगदान दे सकती है। हालांकि, यह ध्यान रखना भी जरूरी है कि वजन घटाने के लिए अकेले च्यूइंग गम चबाना ही काफी है। बेहतर नतीजों के लिए आप अपनी दिनचर्या में स्वस्थ आहार और नियमित व्यायाम शामिल कर सकते हैं। वजन घटाने के लिए लोग च्युइंग गम इसलिए भी खाते हैं, क्योंकि यह भूख को कम करने की क्षमता रखती है। च्युइंग गम चबाने से, आप अपने मस्तिष्क को यह सोचने पर मजबूर करते हैं कि आप कुछ खा रहे हैं, जिससे क्रेविंग्स कम करने और ओवरईटिंग से बचने में मदद मिल सकती है। हालांकि, अनावश्यक कैलोरी इनटेक से बचने के लिए शुगर-फ्री च्युइंग गम चुनना जरूरी है।

च्युइंग गम स्नैकिंग से ध्यान भटकाने का काम भी कर सकती है। जब आपको खाने के बीच नाश्ता करने की इच्छा होती है, तो च्युइंग गम का एक टुकड़ा खाने से अतिरिक्त कैलोरी इनटेक किए बिना ही आप अपनी भी इच्छा को शांत कर सकते हैं। यह आपको तृप्ति की भावना देता है और आपको अनहेल्दी नाश्ता खाना खाने से भी रोक सकता है। च्युइंग गम से वजन कम होने के व्यक्तिगत परिणाम भिन्न हो सकते हैं। कुछ लोगों को च्युइंग गम से वजन घटाने में मदद मिली है। लेकिन क्या च्युइंग गम चेहरे की चर्बी कम करने में मदद कर सकता है? वजन घटाने और चेहरे की चर्बी को कम करने के लिए च्युइंग गम के कुछ संभावित लाभ हो सकते हैं, लेकिन इसे वजन घटाने और चेहरे की चर्बी कम करने का एकमात्र तरीका नहीं माना जा सकता है। वजन घटाने के लिए संतुलित आहार और नियमित व्यायाम का पालन करना आवश्यक है।

भारत में बिना परमिट पतंग उड़ाना एक अपराध है !

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 9 अगस्त , जाने अनजाने में आप बहुत से कानूनों का उल्लंघन कर रहे है क्योंकि हम में से ज्यादातर लोग सोचते हैं कि हम सभी नियमों का पालन करते हैं और कोई कानून नहीं तोड़ते हैं। हालाँकि, कुछ कानून ऐसे भी हैं जिन्हें हम बार-बार तोड़ते रहते हैं और हमें हमें एहसास भी नहीं होता।ना जाने आप में से कितनों ने अपने बचपन में ही कुछ ऐसी गैर कानूनी हरकतें कर दी होंगी जिनसे आप खुद अनजान होंगे। ऐसा ही एक मासूम जुर्म है जो आप में से बहुत से लोगों ने ज़रूर किया होगा। वह है बिना परमिट पतंग उड़ाना ! अरे हुज़ूर इसमें हसने की कोई बात नहीं हैं। वाकई में कानून के हिसाब से भारत में बिना परमिट पतंग उड़ाना एक अपराध है(without aircraft permit kite flying banned)। पतंग उड़ाना एक ऐसी चीज़ है जिसे हममें से ज़्यादातर लोग प्यार करते हैं, खासकर मकर संक्रांति के समय। तो क्या अब तक भारत की छतों और छज्जों से उड़ने वाली लाखों रंग बिरंगी पतंगें गैरकानूनी थीं?

साभार - सो.मी.

कैसे और क्यूँ है पतंगबाज़ी अपराध

आइए विस्तार से जाने। भारत में बिना परमिट पतंग उड़ाना एक अपराध है ।भारतीय विमान अधिनियम 1934 के अनुसार, आपको विमान उड़ाने के लिए परमिट की आवश्यकता होती है। अधिनियम के अनुसार, एक विमान कोई भी मशीन होती है जो "वायु की प्रतिक्रिया से वायुमंडल में समर्थन प्राप्त कर सकती है जिसमें गुब्बारे, वायु जहाज, पतंग, ग्लाइडर और फ्लाइंग मशीन शामिल हैं।"

As per the Indian Aircraft Act, 1934, you need a permit to fly an aircraft. According to the Act, an aircraft is any machine that can "derive support in the atmosphere from reaction of the air that include balloons, air ships, kites, gliders and flying machines."

याद रखें कि पतंग को लापरवाही से उड़ाने के लिए आपको 2 साल की कैद या 10 लाख रुपय तक का जुर्माना भी अदा करना पड़ सकता है। तो क्या बसंत और मकर संक्रांति पर आपको अपना पतंगों के प्रति प्रेम छोड़ देना चाहिए? क्या चाँद-तारा, अद्धा, चरखी मांजा सब बीती बातें हो जायेंगी? बिलकुल नहीं! क्यूंकि पतंग हमारी संकृति का अभिन्न अंग है। वैसे भी लेकिन घबराने की बात तो है ही नहीं। क्यूंकि प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी से लेकर सलमान ख़ान सब ने जाने अनजाने में यह मासूम गुनाह किया है।

अँधेरे का भी एक रंग होता है क्या आप जानते हैं नाम ?

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 9 अगस्त , बचपन में हम सभी 'अंधेरे से डरे हुए' दौर से गुजरते हैं। यूं तो जब हम छोटे थे हम कई मायनों में, उन चीजों के सामने निडर थे जिन्हें हम वयस्कों के रूप में अधिक सतर्क हो जाते है। परन्तु बचपन में अंधेरे के बारे में कुछ ऐसा था जो हमें हर रात किनारे पर रखता था। कुछ था अंधेरे में की बचपन में कि हमने अंधेरे की काले रंग से भूतो और राक्षसों के भरम मन में पैदा कर लिए।

शोधकर्ताओं की दिलचस्प अन्वेषण

दरअसल इसके पीछे इंसान के विकास पर कुछ शोधकर्ताओं ने अनुमान लगाया है। उनके अनुसार यह सहज भय मानव इतिहास के एक बिंदु से उपजा है जब हम आज के जैसे सर्व सम्पन्नं नहीं थे। आज तो हम स्वयं को समस्त दुनिया सबसे शक्तिशाली और सबसे बड़े शिकारी समझते हैं । इंसानी मस्तिष्क की क्षमता ने हमें और प्राणियों से भीं बनाया और फिर प्रौद्योगिकी के आगमन के साथ ही मनुष्य वास्तव में सुपर शिकारी बन गए। जो संभवता हम अतीत में नहीं थे।

शायद जब हम इतने विकसित नहीं थे, हमारे पूर्वज लगातार जंगली शिकारियों की चपेट में आ जाते थे। हम रात में और शिकारी जानवरों की तीव्रता से ना तो देख पाते, ना ही सूंघ पाते। अँधेरे में हम मजबूर थे और भयभीत थे। बस दिन के होने का इंतज़ार करते। इसका मतलब है कि हमारे पूर्वजों के लिए आधी रात में सुरक्षित रहना

साभार - गूगल

बेहद जरूरी था। अगर वे नहीं करते, तो वे मर जाते। वर्षों से, यह रात का डर सहज हो गया है, और हम आज भी इसे हल्की चिंता के रूप में अनुभव करते हैं।

गिज़मोडो में एंड्रयू टारनटोला के अनुसार, कनाडा में टोरंटो विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं द्वारा 2012 इस पर दिलचस्प अध्ययन किया। इस में इस बात की चर्चा है कि पूर्वजों को अंधेरे में सतर्क रहने की यह सोच हम मानवों में आज तक पनपती है। अंधेरे से डरना असल में अज्ञात का डर है। हम नहीं देख सकते कि वहां क्या है और यह ही हमें डराता। हमारी कल्पना सबसे खराब संभव चीज को दिमाग में भर देती है और हम डरने लगते हैं।

बदलते वक़्त के साथ बदली है धारणाएं

खैर बदलते समय के साथ काले रंग के मायने अब बदल रहे है। कला रंग आज फैशन की दुनिया का सबसे पसंदीदा रंग बन गया है। हॉलीवुड हो या बॉलीवुड काले रंग बड़े से बड़े सितारे को लुभाता है। काले रंग की गाडी या काले रंग का चश्मा इस्तेमाल करते ही बात बन जाती है। काले रंग का वहम तो वक्त के साथ दूर हो गया है लेकिन अँधेरा आज भी डराता ही है।

घोर अँधेरे में आप जो रंग देखते हैं उसका भी एक नाम है। एक रंग का नाम Eigengrau भी होता है। अगर आप पूरी तरह से अंधेरे कमरे में अपनी आंखें बंद करते हैं। जब आप उन्हें खोलते हैं, तो आपको जो रंग दिखाई देता है उसे ईगेंग्राउ (eigengrau) कहा जाता है। ईगेंग्राउ अर्थ है आंतरिक धूसर। यह गहरे भूरे रंग की छाया है जिसे लोग तब देखते हैं जब कोई प्रकाश नहीं होता है। तो अगली बार जब अंधेर में हों तो आप डरे नहीं बस कहें बहुत ईगेंग्राउ है न ।

अनोखा ज्ञान : हड्डियों का एक-चौथाई हिस्सा पैरों में होता है !

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 9 अगस्त , जन्म के समय एक शिशु की 300 हड्डियां होतीं हैं। जैस जैसे बच्चे बड़े होतें हैं उनकी हड्डियों की वास्तविक संख्या घट जाती है। बच्चों की कई हड्डियां एक साथ फ्यूज हो जाती हैं वयस्कता तक यह 300 हड्डियाँ से 206 हड्डियां बन जाती हैं। लेकिन हम आपको इससे भी कहीं ज़्यादा हैरान कर देने वाले तथ्य के बारे में बताने जा रहे हैं। वोह यह कि आपकी सभी हड्डियों का एक-चौथाई हिस्सा आपके पैरों में स्थित है।प्रत्येक पैर में 26 हड्डियां होती हैं। दोनों पैरों में 52 हड्डियाँ हैं जो कि आपके पूरे शरीर की 206 हड्डियों में से 25 प्रतिशत से अधिक है। यह तथ्य सुनने में एक गप जैसा लगता है लेकिन 100% सत्य है। अगर आप ध्यान से इसके बारे में सोचें तो आपको एहसास होगा कि आपके दो पैर आपके पूरे शरीर के वजन को सहारा देने में सक्षम होतें है खासकर जब आप खेलते कूद्तें हैं,दौड़तें है या फिर चढाई पर चढ़तें है। आपके दो पैरों की यह अनेकों हड्डियां और जोड़ ही हैं जो चलते फिरते झटकों को कुशलतापूर्वक absorb करती हैं। आपकी सभी हड्डियों का एक-चौथाई हिस्सा आपके पैरों में स्थित है ।

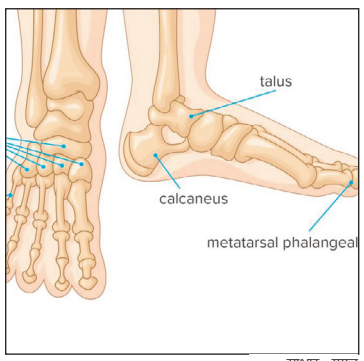

साभार - गूगल

इंसान को मिला है क्या अनोखा वरदान

इंसान ही ऐसे जीव हैं जो दो पैरों पर सहजता से चल सकतें है और इस वजह से वह अपने हाथों और पैरीं से अलग अलग कार्य आसानी कर सकते हैं। देखा जाए तो इंसानों का सिर्फ सबसे अधिक विकसित मस्तिष्क का होना ही उन्हें समस्त जीवों में सर्वोच्च नहीं बनाता, उनके दो पैरों पर चल पाने की क्षमता भी उन्हें एक अनूठे वरदान के रूप में मिली हैं। सच में आमूमन हमें दो पैरों पर चल पाने की अपनी इस अनन्य शक्ती का एहसास तक नहीं होता मगर यह कुदरत का हमें अमूल्य उपहार है। यही एक कारण है कि दो पांव पर चलने वाला मनुष्य अस्तित्व की दौड़ में आज सभी अन्य प्राणियों से आगे रहता है।

मंत्री गणेश जोशी ने प्रभावितों को बांटे 5 हज़ार रूपये सहायता के चेक

■ अधिकारियों को दिए सुरक्षात्मक कार्य करने के निर्देश

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून, 9 अगस्त , कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने देहरादून में हुई भारी बारिश के कारण हुए नुकसान का मसूरी विधानसभा क्षेत्र के बदरीनाथ कॉलोनी, पथरिया पीर, केनाल रोड़, राजीव नगर कंडोली, काठबंगला, कार्लीगाड, चामासारी, डीवीसी कॉलोनी आदि जगहों पर मौके पर पहुचकर बारिश से हुई नुकसान का स्थलीय निरीक्षण किया। मंत्री ने अधिकारियों को बारिश से हुए नुकसान को लेकर तत्काल प्राथमिक तौर पर कार्यवाही के निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों को बरसाती पानी से लोगों के मकानों गलियों हुए नुकसान को लेकर सुरक्षात्मक कार्य शीघ्र करने निर्देश दिए। मंत्री ने अधिकारियों को कहा कि जहां जहां सुरक्षा दीवार की आवश्यकता है वह शीघ्र किया जाए। जिन लोगों का नुकसान हुआ है उनका आपदा मद में शीघ्र इस्टीमेट बनाकर

कार्य करने के अधिकारियों को निर्देशित किया।

मंत्री ने बीती देर रात बारिश से हुए नुकसान का मुआवजा राशि भी देवीय आपदा के अंतर्गत आंशिक क्षति की सहायता राशि के 05 हजार रुपए के चैक 09 लोगों को मौके पर वितरित किया। मंत्री ने कहा प्रदेश सरकार की तरफ से प्रभावितों के हर संभव मदद की जाएगी। इस अवसर पर उपजिलाधिकारी नरेश चंद्र दुर्गापाल सहित सिंचाई विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे। इस लोगो को दी गई आंशिक क्षति की सहायता राशि के 5 हजार रुपए के चैक विक्रम शंकर, रामवती, नारायण सिंह थापा, महावीर सिंह, राजेंद्र प्रसाद, अमिताभ, राजेंद्र सजवान,महवीर सिंह, राजेंद्र प्रसाद को 5 हजार की सहायता राशि के चेक वितरित किए गए।

नशा तस्करों पर पौड़ी पुलिस की बड़ी कार्यवाही

■ पौड़ी पुलिस ने विगत 08 माह में अब तक कुल 16 व्यक्तियों के विरुद्ध गुण्डा एक्ट कार्यवाही करते हुये 03 व्यक्तियों को किया जिला बदर

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

पौड़ी 09 अगस्त : उत्तराखण्ड सरकार द्वारा वर्ष-2025 तक उत्तराखंड को नशामुक्त बनाये जाने हेतु दिए गए आदेशों के क्रम में एसएसपी पौड़ी श्वेता चौबे द्वारा जनपद के समस्त थाना प्रभारियों को थाना क्षेत्रान्तर्गत पड़ने वाले शिक्षण संस्थानों व ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर छात्र-छात्राओं व आमजन मानस को नशे के दुष्प्रभाव के सम्बन्ध में जागरूक करते हुए जनपद में आपराधिक गतिविधियों की रोकथाम, आदतन अपराधियों की निगरानी करने, भविष्य में आपराधिक गतिविधियों पर अंकुश लगाए जाने तथा अवैध गतिविधियों में संलिप्त आदतन अपराधियों के विरुद्ध नियमानुसार कड़ी कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया गया है ।जिसके क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक कोटद्वार शेखर चन्द्र सुयाल के निर्देशन, क्षेत्राधिकारी कोटद्वार के पर्यवेक्षण, प्रभारी निरीक्षक मणिभूषण वास्तव के नेतृत्व में पौड़ी पुलिस ने अभियुक्त 1.मुकेश चौहान 2.आशीष जुयाल

3.सतीश व 4. बन्टी कुमार के द्वारा आबकारी अधिनियम व एनडीपीएस एक्ट के मादक पदार्थों की तस्करी करते हुए अपने दैनिक खर्चों की पूर्ति व आर्थिक लाभ हेतु संलिप्त होने के कारण उनके विरूद्ध गुण्डा अधिनियम के अन्तर्गत कार्यवाही की गयी। जनपद पुलिस ने विगत 08 माह में अब तक कुल 16 व्यक्तियों के विरुद्ध गुण्डा एक्ट कार्यवाही करते हुये 03 व्यक्तियों को भी जिला बदर किया गया। उपरोक्त सभी अभियुक्त थाना क्षेत्र में लगातार मादक पदार्थों की तस्करी में संलिप्त थे। जनपद में ऐसे आदतन अपराधी जो कई अपराधों में लगातार संलिप्त हैं, उनके विरुद्ध गुण्डा एक्ट के अंतर्गत वैधानिक कार्यवाही लगातार जारी है।

संक्षिप्त खबरें

17 घंटे बाधित रहा बदरीनाथ हाईवे

ऋषिकेश। बरसात में बदरीनाथ हाईवे पर मलबा आने से आवाजाही बाधित होने का सिलसिला जारी है। तोताघाटी और अटाली में हाईवे का एक बड़ा हिस्सा धंस गया है। इससे करीब 17 घंटे हाईवे बाधित रहा। मंगलवार को दोपहर करीब 12 बजे हाईवे पर यातायात सामान्य हो पाया। लेकिन मलबा गिरने से मार्ग फिर बाधित होने के आसार बने हुए हैं। तोताघाटी और अटाली में सोमवार शाम को मलबा आने से बंद हुए नेशनल हाईवे को मंगलवार दोपहर खोल दिया गया। इस दौरान हाईवे का तोताघाटी में करीब 30 और अटाली में लगभग 40 मीटर पैच मलबे से धंस गया है। क्षतिग्रस्त हिस्सों की मरम्मत के लिए एनएच पीडब्ल्यूडी के अधिकारी संबंधित निर्माण एजेंसी के कर्मचारियों के साथ मौके पर पहुंचे। उन्होंने राजमार्ग पर वाहन सवारों की सुरक्षा के लिए चेतावनी बोर्ड समेत अन्य आवश्यक इंतजाम किए। लेकिन अभी भी मलबा लगातार गिरने से मार्ग बाधित होने के आसार बने हुए हैं। एनएच श्रीनगर डिवीजन के सहायक अभियंता हरीश गेलाकोटी ने बताया कि हाईवे पर वाहनों की आवाजाही सुचारु हो गयी है। धंसे हिस्से को भरा जा रहा है। राजमार्ग के चौड़ीकरण से जुड़ी निजी एजेंसी पर पांच साल तक मरम्मत का भी जिम्मा है। एजेंसी को मरम्मत कार्य अतिशीघ्र पूरा करने के निर्देश दिए गए हैं। वाहन चालकों को भी आवाजाही में सावधानी बरतने की सलाह दी जा रही है।

विशेष दाखिल खारिज कैंप में 615 वादों का निस्तारण

ऋषिकेश। तहसील डोईवाला में विशेष दाखिल खारिज शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें कुल 615 वादों का निस्तारण हुआ। मंगलवार को ब्लॉक सभागार में आयोजित शिविर में ग्रामीण समस्याओं को लेकर पहुंचे। उपजिलाधिकारी शैलेंद्र सिंह नेगी ने बताया की विशेष कैंप में दाखिल खारिज निर्विवाद के 525 वादों और विवादित 3 वादों का निस्तारण किया गया। कैंप में मृतक भूमिधर के वारिसान दर्ज करने के प्रकरणों में 71 वादों का निस्तारण किया गया। अन्य प्रकरणों का भी निस्तारण किया गया। एसडीएम ने बताया कि तहसील डोईवाला के तहत अगला विशेष दाखिल खारिज कैंप इस माह के अंतिम सप्ताह में लगाया जाएगा। कैंप में नगर पालिका डोईवाला व पंचायती राज विभाग की ओर से जन्म, मृत्यु प्रमाण पत्र के लिए भी आवेदन लिए गए। कैंप में तहसीलदार सोहन सिंह रांगड, ईओ उत्तम सिंह नेगी, राजस्व उप निरीक्षक पंकज शर्मा, प्रदीप सिंह, नीरजकांत, सरदार सिंह चौहान, रामभोज शर्मा, सफाई निरीक्षक सचिन रावत आदि मौजूद रहे।

श्रीदेवसुमन विवि ऋषिकेश के छात्रों ने दिखाया हुनर

ऋषिकेश। श्रीदेव सुमन विश्वविद्यालय ऋषिकेश परिसर के रसायन विज्ञान विभाग के छात्र-छात्राओं ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में हुनर दिखाया। प्रतियोगिता में अलग-अलग प्रतियोगिताओं में हर्षित यादव, स्वाति गौतम, सुहासिनी अवस्थी, सुहानी ने पहला स्थान पाया। रसायन विज्ञान परिषद की ओर से आयोजित ऑनलाइन प्रतियोगिता में 50 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। रसायन विज्ञान का समाज पर प्रभाव विषय पर निबंध लेखन प्रतियोगिता में एमएससी चतुर्थ सेमेस्टर की छात्रा हर्षित यादव ने पहला, बीएससी द्वितीय सेमेस्टर की छात्रा अदिति कोटियाल व सलोनी ने तीसरा स्थान पाया। रसायन और मानव स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव विषय पर आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता में बीएससी द्वितीय सेमेस्टर की स्वाति गौतम ने प्रथम, बीएससी षष्टम सेमेस्टर की प्रियंका कुशवाह ने द्वितीय व बीएससी द्वितीय सेमेस्टर की याशिका हर्षयाना ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। स्पेक्ट्रोस्कोपिक तकनीक और अनुप्रयोग विषय पर आयोजित पोस्टर बनाओ प्रतियोगिता में एमएससी चतुर्थ सेमेस्टर की सुहासिनी अवस्थी ने पहला, एमएससी चतुर्थ सेमेस्टर की अंजलि रावत ने दूसरा व एमएससी चतुर्थ सेमेस्टर के मनीष भट्ट ने तीसरा स्थान पाया। खाद्य पदार्थों में रसायनों की मिलावट विषय पर लेखन प्रतियोगिता में सुहानी, बीएससी द्वितीय सेमेस्टर ने पहला, ईशा शर्मा, बीएससी द्वितीय सेमेस्टर ने दूसरा व खुशी धीमान, बीएससी. द्वितीय सेमेस्टर ने तीसरा स्थान प्राप्त क्रिया।

छात्र छात्राओं को कूड़ा निस्तारण की बारिकियों से अवगत कराया

विकासनगर। जौनसार पब्लिक स्कूल चकराता के छात्र छात्राओं ने मंगलवार को छावनी क्षेत्र के एमईएस लाइन स्थित पर्यावरण पार्क का भ्रमण किया। जहां छात्र-छात्राओं को कूड़ा निस्तारण की बारीकियां बताई गईं। इस मौके पर छात्र छात्राओं को सिंगल यूज प्लास्टिक से पर्यावरण को होने वाले नुकसान के बारे में भी जानकारी दी गईं। फीडबैक फाउंडेशन व छावनी परिषद चकराता द्वारा नवीनतम तकनीक से किये जा रहे कूड़ा निस्तारण के कार्य को जौनसार पब्लिक स्कूल के कक्षा आठ के 22 बच्चों ने मंगलवार दोपहर पर्यावरण पार्क में पहुंच कर कूड़ा निस्तारण की बारीकियों को समझा। फीडबैक फांउडेशन की टीम द्वारा स्कूल के बच्चों और शिक्षकों को कूड़े के चार प्रकार से सोर्स सेग्रीगेशन की विस्तार पूर्वक जानकारी दी। साथ ही सिंगल यूज़ प्लास्टिक का इस्तेमाल न करने की सलाह भी दी गई। संस्था के प्रतिनिधि मुनेश यादव ने जानकारी देते हुए बताया कि कूड़ा बाहर फेंकने से क्या क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि कूड़े का सही प्रकार से निष्पादन न होने से पर्यावरण गन्दा होता है। जो विभिन्न रोगों का कारक बनता है इसलिए घर या घर के बाहर या बस्तियों में कचरा न फैलाने के लिए लोगों को भी जागरूक किया जाए। इसमें बच्चे बड़ा रोल निभा सकते हैं। उन्होंने बच्चों को रोजाना निकलने वाले गीले कूड़े, सूखे कूड़े, जैव अपशिष्ट कूड़े व घरेलू हानिकारक कूड़े के निस्तारण के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी उपलब्ध कराते हुए बच्चों से आह्वान किया कि वह घर परिवार और आसपास के समाज मे भी जागरूक पैदा करें जिससे हमारा वातावरण साफ व स्वच्छ रह सके। इस दौरान बच्चों ने वहां मशीनों व अन्य प्रकार से हो रहे कूड़ा निस्तारण को भी देखा।

एक्शन में नैनीताल डीएम, 4 जगहों पर चलेगा बुलडोजर

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

नैनीताल 09 अगस्त : नैनीताल में शत्रु संपत्ति पर अवैध कब्जा करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। प्रशासन ने इस मामले में सख्त रुख अपनाते हुए एक शत्रु संपत्ति पर कार्रवाई भी की है। इस तरह प्रशासन ने कार्रवाई कर जता दिया है कि अतिक्रमण किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। कुछ समय पहले नैनीताल में मेट्रो पोल शत्रु संपत्ति के खिलाफ कार्रवाई की गई और अब 4 अन्य शत्रु संपत्ति पर से भी अतिक्रमण हटाए जाने की तैयारी है। डीएम वंदना सिंह ने बताया कि जिले में पांच शत्रु संपत्ति हैं। जिनमें से एक से अतिक्रमण हटाया गया है। अन्य 4 में कार्रवाई होनी बाकी है। यहां आपको शत्रु संपत्ति क्या होती है, ये भी बताते हैं। शत्रु संपत्ति यानी दुश्मन की संपत्ति। फर्क बस इतना है कि ये दुश्मन वो शख्स हो सकता है, जो दुश्मन देश में रह रहा हो। जैसे भारत-पाकिस्तान के बंटवारे में जो लोग पाकिस्तान चले गए। वो जमीन, घर, मकान, हवेलियां, कोठियां समेत सब कुछ यहीं छोड़कर चले गए। इन संपत्तियों को सरकार ने अपने कब्जे में ले लिया। ऐसी संपत्ति को ही शत्रु संपत्ति कहा जाता है। नैनीताल जिले में ऐसी पांच शत्रु संपत्तियां हैं, जिनमें से एक से अतिक्रमण हटाया गया है। डीएम वंदना सिंह ने कहा कि 4 अन्य शत्रु संपत्तियों में से दो शत्रु संपत्ति हल्द्वानी, जबकि दो नैनीताल शहर में है। इन पर लोगों ने कब्जा किया हुआ है।

कब्जा हटाने के लिए विधिक कार्रवाई की जा रही है, जैसे ही वैधानिक कार्रवाई पूर्ण होगी, तत्काल अतिक्रमण हटाया जाएगा। बता दें कि धामी सरकार सरकारी जमीन से अवैध कब्जे हटवाने के लिए अभियान चलवा रही है। शहर से लेकर कस्बों और गांवों तक अवैध कब्जे हटवाए जा रहे हैं। शत्रु संपत्ति भी कब्जा मुक्त करवाने की प्रक्रिया शुरू की गई है।

नैनीताल : कैंची धाम में ड्रेस कोड लागू अमर्यादित कपड़े पहने तो नहीं मिलेगी एंट्री

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

नैनीताल 09 अगस्त : आपको याद होगा कि कुछ वक्त पहले उत्तराखंड के तीन मंदिरों में अशोभनीय और अमर्यादित कपड़े पहनकर प्रवेश करने पर रोक लगा दी गई थी। देहरादून स्थित टपकेश्वर मंदिर, ऋषिकेश स्थित नीलकंठ महादेव मंदिर और हरिद्वार स्थित दक्ष प्रजापति मंदिर में अमर्यादित कपड़े पहनकर प्रवेश करने पर पाबंदी लगाई गई थी। अब नैनीताल के मां नैना देवी मंदिर समेत कुछ अन्य मंदिरों में भी इस तरह के बोर्ड लगाए गए हैं। नैनीताल के नयना देवी मंदिर और विश्व प्रसिद्ध श्री कैंची धाम मंदिर में अमर्यादित और अशोभनीय वस्त्र पहनकर प्रवेश करने पर रोक लगा दी गई है। दोनों मंदिरों में बकायदा इसके लिए बोर्ड भी लगा दिए गए हैं। आपको बताते हैं कि नयाना देवी मंदिर नैनीताल की नैनी झील से सटा हुआ है। इसके अलावा नैनीताल से 19 किलोमीटर दूर भवाली से अल्मोड़ा मार्ग पर कैंची धाम स्थित है। देश-विदेश से बाबा नीमकरोरी के भक्त यहां दर्शनों के लिए पहुंचते हैं। 1 वर्ष के भीतर यहां देश-विदेश की कई बड़ी हस्तियों ने दर्शन किए हैं। अब मंदिर ट्रस्ट ने अपनी बैठक में निर्णय लिया है कि अमर्यादित और अनुशासनहीन तरीके से मंदिर में प्रवेश कर मंदिर की मर्यादा को तार-तार किया जा रहा है। ऐसे में मंदिर की पवित्रता को ध्यान में रखते हुए अमर्यादित और अशोभनीय वस्त्र पहन कर प्रवेश करने पर पाबंदी होगी।

साभार - सो.मी.

म्यूजिक की धुन पर अब गाय भैंस देंगी बम्पर दूध

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट 09 अगस्त , आपकी गाय या भैंस अगर दूध कम देती है तो उसे बढ़ाने के लिए आप क्या करते हैं? आपका जवाब सिंपल होगा कि उसे चारा या दूध बढ़ाने वाले फूड्स खिलाते हैं। लेकिन अब एक ऐसी अनोखी रिसर्च आ गई है। जो यह कहती है कि अगर आप अपनी गाय या भैंस को म्यूजिक सुनाते हैं तो उसका दूध बढ़ जाता है। यह रिसर्च की गई है हरियाणा (Haryana) के करनाल स्थित राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान (NDRI Unique Research) की तरफ से।

रिसर्च में कहा गया है कि जिस तरह गाना-बजाना इंसानों को रिलैक्स कर देता है, उसी तरह पशुओं को भी यह तनाव मुक्त रखता है। NDRI की जलवायु प्रतिरोधी पशुधन अनुसंधान केंद्र ने अपने इस शोध में हजारों दुधारू पशुओं को शामिल किया। करीब चार साल तक यह रिसर्च चला। जो नतीजा निकलकर आया, उसमें पता चला कि संगीत से पशुओं का न हेल्थ बेहतर होता ही है, उनकी दूध देने की क्षमता भी बढ़ जाती है।

शोधकर्ताओं का क्या करना है

'संस्थान के वरिष्ठ पशु वैज्ञानिक डॉ. आशुतोष ने बताया कि काफी समय पहले यह सुना जाता था कि गाों को संगीत और भजन पसंद है। भगवान श्रीकृष्ण की मुरली की धुन पर भी गायें चली आती थीं और उसे बड़े भाव से सुनती थी। अब हमने इसी को प्रयोग में अपनाया है। हमें इसका रिजल्ट भी अच्छा मिला है। उन्होंने बताया कि संगीत की तरंगें गाय के मस्तिष्क में ऑक्सीटोसिन हार्मोन को एक्टिव कर देती हैं, जिससे उनका दूध बढ़ जाता है और वे दूध देने के लिए प्रेरित होती हैं।'

दुधारू पशु और संगीत का कनेक्शन

NDRI की स्थापना साल 1955 में की गई थी। तभी से पशुओं पर कई तरह के शोध चल रहे हैं। देसी गायों की नस्लों पर भी कई प्रयोग किए गए हैं। इसी शोध में से एक है पशुओं पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का। शोधकर्ताओं ने गायों-भैंसों को तनाव मुक्त रखने के लिए म्यूजिक सुनाया। उन्होंने देखा कि गाना सुनकर पशु भीषण गर्मी में भी काफी रिलैक्स रहते हैं और बैठकर जुगाली करते हैं। इसका असर उनके दूध पर पड़ा और वे पहले से ज्यादा दूध देने लगे। डॉ. आशुतोष ने बताया कि 'हम पशुओं को एक जगह बांधकर नहीं रखते हैं। क्योंकि इससे वे तनाव में आ जाते हैं। यहां पशुओं को ऐसा वातावरण दिया जा रहा है, जिससे उनपर दबाव न आए और वे तनाव मुक्त रहें। इसके लिए गीत-संगीत का सहारा भी लिया गया, जिसका रिजल्ट शानदार आया है।'

अमेरिका में खटिया की धूम कीमत लाख के पार

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 9 अगस्त , भारत के गाँव और कस्बों में आज भी सोने के लिए खाट का इस्तेमाल किया जाता है, जो आमतौर पर लकड़ी और जूट से बनी होती है। खाट या खटिया कहे जाने वाली इस सस्ते और सुविधाजनक बैड को 1,500 से 2,000 रुपए की कीमत में खरीदा या बेचा जाता है, जो काफी आरामदायक होती है।वहीं दूसरी तरफ शहरों में खाट का कोई इस्तेमाल नहीं होता है, क्योंकि यहाँ रहने वाले लोगों का लाइफ स्टाइल बिल्कुल अलग हो चुका है। ऐसे में जहाँ शहरों में रहने वाले भारतीय खाट को बेकार समझते हैं, वहीं इसके विपरीत अमेरिका में इस खटिया की डिमांड सारे रिकॉर्ड तोड़ रही है।

1.12 लाख रुपए में बिक रही है देसी खाट

दरअसल अमेरिका की एक ई-कॉमर्स वेबसाइट etsy पर भारतीय खाट को ऑनलाइन बिक्री के लिए लिस्ट किया गया है, जिसकी कीमत 1.12 लाख रुपए रखी गई है। इस खाट को अमेरिकी ई-कॉमर्स वेबसाइट को बेचने का काम भारत की माइक्रो स्मॉल एंड मीडियम इंटरप्राइजेज (MSME) नामक कंपनी करती है, जिससे कंपनी को अच्छा मुनाफा हो जाता है।

हालांकि अमेरिकी ई-कॉमर्स वेबसाइट पर 1.12 लाख रुपए की कीमत में बिक रही इस खाट में क्या कुछ खासियत है, इस बारे में डिस्क्रिप्शन में कुछ खास नहीं लिखा है। वहीं अगर खाट की तस्वीरों पर गौर किया जाए, तो वह भारत में इस्तेमाल होने वाली सामान्य खटिया की तरह ही दिखती है।ऐसे में यह कहा जा सकता है कि इंटरनेशनल मार्केट में खाट के प्राइज भारतीय रुपए के मुकाबले ज्यादा है, जिसकी वजह से खाट की कीमत कई गुना बढ़ गई है। हालांकि ऐसा पहली बार नहीं हुआ है, जब किसी इंडियन प्रोडक्ट की इंटरनेशनल वैल्यू ज्यादा हुई है बल्कि इससे पहले गोबर के उबले और नीम की दातुन भी ऑनलाइन बिक्री के चलते खूब सुर्खियाँ बटौर चुके हैं।

डीएम ने किया डांडा लखौण्ड, आईटी पार्क में आपदाग्रस्त क्षेत्र का स्थलीय निरीक्षण

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून। जिलाधिकारी श्रीमती सोनिका ने आज डांडा लखौण्ड, आईटी पार्क में आपदाग्रस्त क्षेत्र का स्थलीय निरीक्षण किया। कल रात्रि में हुई भारी वर्षा के आईटीपार्क, डांडा लखौण्ड सहस्त्रधारा रोड में पुलिया, सडक़ आदि क्षतिग्रस्त हो गए जिनका जिलाधिकारी ने स्थलीय निरीक्षण करते हुए सम्बन्धित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने स्पष्ट निर्देश दिए कि आपदाग्रस्त क्षेत्रों में युद्धस्तर पर कार्य करते हुए व्यवस्था बनाई जाए।

जिलाधिकारी ने सहस्त्रधारा में सोमनाथ नगर नीरू बस्ती, आईटीपार्क से लगते हुए क्षेत्र, डांडा लखौण्ड वार मेमोरियल स्कूल के क्षतिग्रस्त हुए पुस्ते, सडक़, स्कूल के क्षतिग्रस्त ग्राउण्ड दीवार का भूमि का निरीक्षण करते हुए सम्बन्धित अधिकारियों को आपदाग्रस्त क्षेत्र में आंगणन तैयार करने तथा बाड़ सुरक्षा से बचाव कार्य हेतु सिंचाई विभाग के अधिकारियों को तत्काल कार्यवाही के निर्देश दिए। साथ ही लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों को सडक़ों का आंगणन तैयार करते हुए सडक़ निर्माण एवं वैकल्पिक व्यवस्था करने के निर्देश दिए। साथ ही निर्देशित किया कि सुरक्षा दीवार के साथ ही ड्रेनेज की उचित व्यवस्था बनाने के निर्देश दिए।

Birthday Celebrate क्यों करते है ?

साभार - सो.मी.

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट 09 अगस्त : हर साल में एक बार आने वाला जन्मदिन वह दिन होता है जब हम पैदा हुए थे और जीवन की इस खूबसूरत यात्रा की शुरुआत की थी। इस दिन हर कोई हमें जन्मदिन की शुभकामनाएं देता है और हम बड़ी खुशी के साथ इस दिन को celebrated करते हैं। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि जन्मदिन क्यों मनाया जाता है? जन्मदिन मनाने की परंपरा कैसे शुरू शुरू हुई? जन्मदिन मनाने का क्या महत्व है और क्यों जरूरी है, इस लेख में हमने जन्मदिन से जुड़ी पूरी जानकारी के बारे में चर्चा की है। दुनिया के लगभग हर कोने में जन्मदिन मनाया जाता है। शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसे जन्मदिन मनाने के बारे में जानकारी नहीं होगी। इस दिन को बड़े ही उत्साह के साथ मनाया जाता है।

जिसका जन्मदिन होता है उसे शुभकामनाओं के साथ-साथ उपहार भी दिए जाते है और इसके बदले में पार्टी दी जाती है। केक कटिंग, मोमबत्ती बुझाना, गुब्बारे फोड़ना बर्थडे पार्टी के सबसे बड़े के सबसे बड़े भाग होते हैं। आखिर जन्मदिन क्या है? इस बारे में शायद ही किसी को बताने की जरूरत है क्योंकि जन्मदिन वो दिन होता है जब आप इस धरती पर आए थे यानी इस दिन आपका जन्म हुआ था। इसे अंग्रेजी में Birthday कहा जाता है। Birthday Celebration को जन्मदिन मनाना कहते हैं। आज से कई वर्ष पहले लोग जन्मदिन नहीं मनाते थे या यूं कहें कि बहुत कम लोग जन्मदिन मनाते थे। कई लोगों को तो अपने जन्मदिन के बारे में जानकारी भी नहीं होती थी कि उनका जन्मदिन कब आया और चला गया। आज भी आपको ऐसे लोग मिल जाएंगे जो जन्मदिन नहीं मनाते हैं, भले ही उन्हें अपनी जन्म तिथि मालूम हो या नहीं। यहां पर हम आपको यह बता रहे है कि लोग जन्मदिन क्यों मनाते हैं या जन्मदिन मनाने के पीछे क्या कारण है।

इस भौतिक संसार में हम कई प्रकार की परिस्थितियों से गुजरते हैं जहां कई बार हमारा मन निराश हो जाता है या हमारे जीवन में कठिन समय आ जाता है। ऐसा जरूरी भी नहीं है, फिर भी छोटी-छोटी क्रियाओं में जीवन का आनंद लेने तथा सांसारिक मामलों से बाहर आकर खुद को खुशी प्रदान करने के लिए जन्मदिन मनाया जाता है।

भौतिकवादी दुनिया को ध्यान में रखते हुए देखा जाए तो खुद के लिए समय निकालना तथा खुद को खुश रखना काफी मुश्किल काम बन गया है। ऐसे में जन्मदिन वो अवसर होता है जो आपको ऐसा करने का मौका देता है। किसी के जन्मदिन पर सभी दोस्त, परिवार व रिश्तेदार एक साथ इकट्ठा होते हैं। वैसे तो यह सब लोग किसी अन्य त्योहार पर भी एक साथ एकत्रित होते हैं, फिर भी किसी एक व्यक्ति के लिए इन सब का एक साथ आना उसे बहुत अच्छा महसूस कराता है और खुद का मूल्य भी समझता है। मजाकिया लहजे में कहा जाए तो किसी की उम्र जानने के लिए जन्मदिन मनाया जाता है। सामान्य तरीके से देखा जाए तो जन्मदिन अधिकतर वही लोग मनाते हैं जिनके पास पैसा होता है क्योंकि वो इस प्रकार के पार्टी तथा तामझाम को afford कर सकते हैं।हालांकि यह भी जरूरी नहीं है कि जन्मदिन पर कोई बड़ी पार्टी दी जाये। छोटा-सा आयोजन भी किया जा सकता है या बिना किसी आयोजन किये परिवार के साथ बर्थडे को सेलिब्रेट किया जा सकता है।

क्या जन्मदिन मनाना जरूरी है, जी नहीं, लोगों को जन्मदिन मनाना कोई अनिवार्य नहीं है। यह सब की व्यक्तिगत रूप से पसंद होती है। कोई जन्मदिन मनाना पसंद करता है तो किसी को इस प्रकार के आयोजन करना पसंद नहीं होता है। इसलिए अपनी पसंद होती है। ये जरूरी नहीं है की बर्थडे मनाया ही जाए।

शाबाश हरिद्वार पुलिस : 72 घंटे के अंदर किया हत्या का खुलासा

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

हरिद्वार 09 अगस्त : झलकारी बस्ती हरिद्वार निवासी पूनम द्वारा दिनांक 05.08.2023 को कोतवाली नगर हरिद्वार में लिखित तहरीर देकर अपने बेटे आकाश उर्फ मोगली की हत्या कर देने के सम्बन्ध में एडियन सहित 04 नफर अभियुक्तों के विरुद्ध मुकदमा पंजीकृत कराया गया था। दर्ज मुकदमे की विवेचना व0उ0नि0 मुकेश थलेडी द्वारा की जा रही थी।

घटनास्थल एवं उसके आसपास रहने वाले लोगों से पूछताछ, C.C.T.V. कैमरा फुटेज, मुखबिरों को सक्रिय करते हुए प्रकरण से संबंधित कई छोटी बड़ी सूचनाओं के एकत्रीकरण और उनकी कड़ियों को जोड़ने के पश्चात पुलिस टीम को 02 संदिग्ध व्यक्तियों पर शक हुआ। पड़ताल को आगे बढाते हुए टीम ने जब 01 संदिग्ध मुकेश चंदारिया को हिरासत में लेकर सख्ती से पूछताछ की गई तो स्पष्ट हुआ कि दिनांक 30.07.2023 की रात्रि मुकेश अपने साथी के साथ शराब पीकर अवैध शराब बेच रही महिला की झोपड़ी में लेटा था कि तभी मृतक ने वहां आकर चोरी का प्रयास किया।

दोनों अभियुक्तों ने मृतक को मौके पर रंगे हाथों पकड़कर उसकी पिटाई कर दी। मृतक जान छुटाकर कुछ दूरी तक भागा भी था लेकिन मृतक द्वारा पहले भी ऐसे ही चोरी करने के कारण गुस्से में आकर दोनों ने उसका पीछा किया और कुछ दूरी पर पकड़कर जान से मार दिया। हत्या के बाद दोनों अभियुक्तों ने महिला की मदद से ब्रह्मपुरी कृष्णा डेयरी के पास रेलवे लाईन के पास फेंक दिया था जिससे लोगों को लगे कि मृतक नशे में ट्रेन से टकराकर मर गया है।पुलिस टीम ने आरोपी महिला भगवती को भी दबोच लिया। अब तक की विवेचना में तहरीर में अंकित चारों नामजद अभियुक्त की कोई भूमिका नहीं पाई गई है। फरार अभियुक्त बाबा की तलाश हेतु टीम गठित की गयी है। अभियुक्त मुकेश और भगवती को माननीय न्यायालय हरिद्वार के समक्ष पेश किया जा रहा है।

- शक की सुई किसी और पर लेकिन शिकारी निकले कोई और
- विवेचना में हुआ दूध का दूध पानी का पानी, 04 नामजदों की नहीं मिली कोई संलिप्तता
- महिला सहित 02 अभियुक्तों को दबोचा, अब बाबा की की जा रही है तलाश

नाम पता अभियुक्त-

1- मुकेश चंदारिया पुत्र मोहन लाल निवासी मौहल्ला ब्रह्मपुरी कोतवाली नगर हरिद्वार2- भगवती पत्नी मनोहर निवासी झलकारी बस्ती बिल्केश्वर रोड हरिद्वार

पति को 'काला' कहना पत्नी को पड़ा भारी !

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 9 अगस्त , तलाक के एक मामले की सुनवाई करते हुए कर्नाटक HC ने अपने फैसले में कहा है कि पति के काले रंग को लेकर बार-बार टिप्पणी करना 'क्रूरता' के समान है। दरअसल इस टिप्पणी पर तलाक का आधार बनता है। पति का रंग काला होने के कारण उसका अपमान करना क्रूरता की श्रेणी में आएगा है। लेकिन पत्नी यदि ऐसा लगातार करती है तो फिर यह तलाक का एक मजबूत आधार बनता है। HC ने 44 वर्षीय व्यक्ति को अपनी 41 वर्षीय पत्नी से तलाक दिए जाने की मंजूरी देते हुए हाल में एक फैसले में यह टिप्पणी की। अदालत ने कहा कि उपलब्ध साक्ष्यों की बारीकी से जांच करने पर निष्कर्ष निकलता है कि पत्नी काला रंग होने की वजह से अपने पति का बार-बार अपमान करती थी, उसे प्रताड़ित करती थी और वह इसी वजह से पति को छोड़कर भी चली गई थी।

पति बोला- बच्ची के लिए सहता रहा अपमान

हांलाकि सुनवाई में पति ने फैमिली कोर्ट में पत्नी द्वारा लगाए गए आरोपों से इनकार कर दिया और पति तथा ससुराल वालों पर उसे प्रताड़ित करने का आरोप लगाया। पारिवारिक अदालत ने 2017 में तलाक के लिए पति की याचिका खारिज कर दी थी जिसके बाद उसने HC का रुख किया था। न्यायमूर्ति आलोक अराधे और न्यायमूर्ति अनंत रामनाथ हेगड़े की खंडपीठ ने कहा, 'पति का कहना है कि पत्नी उसका काला रंग होने की वजह से उसे अपमानित करती थी। हालांकि पति ने यह भी कहा कि वह बच्ची की खातिर इस अपमान को सहता था।'

'पति के काले होने की वजह से पत्नी नहीं करती थी पसंद'

मामले की सुनवाई करते वक्त कर्नाटक HC ने कहा कि पति को बार-बार 'काला' कहना क्रूरता के समान है। उसने पारिवारिक अदालत के फैसले को रद्द करते हुए कहा, 'पत्नी ने पति के पास लौटने की कोई कोशिश नहीं की और अगर if रिकॉर्ड में उपलब्ध साक्ष्य देखें तो साबित करते हैं कि उसे पति का रंग काला होने की वजह से इस शादी में कोई दिलचस्पी नहीं थी, उसे पसंद नहीं करती थी। इन दलीलों के संदर्भ में यह अनुरोध किया जाता है कि पारिवारिक अदालत विवाह ख़त्म करने का आदेश दें।'

साभार - सो.मी.

22 अगस्त को प्रदेशभर में बच्चों को खिलायी जाएगी कृमि नाशक दवाई : अमनदीप कौर

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून, 08 अगस्त 2023, आगामी राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु उत्तराखण्ड राज्य स्तरीय समन्वय समिति की बैठक श्रीमती अमनदीप कौर, अपर सचिव स्वास्थ्य एवं अपर मिशन निदेशक, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन उत्तराखंड की अध्यक्षता में एन.एच.एम. सभागार देहरादून में आयोजित की गई।इस बैठक में अगस्त 2023 में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस कार्यक्रम को सफल बनाने की रणनीति तय की गई। जिसमें कृमि मुक्ति दिवस कार्यक्रम उत्तराखण्ड के सभी 13 जिलों में 1 से 19 साल तक के 38.36 लाख बच्चों और किशोरों को 22 अगस्त 2023 एवं किसी कारणवश कृमिनाशक दवा खाने से वंचित रह गये बच्चों को मॉप-अप दिवस 29 अगस्त 2023 को एल्बेंडाजोल दवा प्रशिक्षित शिक्षकों एवं आंगनबाडी कार्यकर्ताओं द्वारा स्कूलो एवं आंगनवाड़ी केन्द्रों मे खिलायी जायेगी।

अपर सचिव स्वास्थ्य एवं अपर मिशन निदेशक एनएचएम श्रीमती अमनदीप कौर द्वारा बताया गया कि कृमि से होने वाले दुस्प्रभावों की रोकथाम के लिए भारत एवं उत्तराखण्ड सरकार द्वारा राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस कार्यक्रम का आयोजन वर्ष में दो बार कृमि संक्रमण और उस से सम्बंधित रोगों की रोकथाम के लिए किया जाता है। इस कार्यक्रम में 1 -19 वर्ष के सभी बच्चों और किशोरों को स्कूल, तकनीकी संस्थानों और आंगनवाड़ी एवं शहरी स्वास्थ्य पोस्ट के माध्यम से अगम्य व मलिन बस्तियों /क्षेत्रों अभियान चलाकर डिवर्मिंग दवा एल्बेंडाजॉल खिला कर कृमि मुक्त किया जाता है।अपर सचिव स्वास्थ्य ने राज्य के सभी अधिकारीयों को निर्देशित कर कहा कि राज्य के सभी बच्चों को कृमि मुक्त किया जाना सुनिश्चति करें।

हमारा लक्ष्य है कि हम राज्य के शत प्रतिशत बच्चों को कृमिनाशक दवा खिलाकर उनको कृमि मुक्त करें तथा स्वस्थ्य उत्तराखण्ड के निर्माण में एक और कदम आगे बढ़ें। बैठक में अपर सचिव ने बताया की उत्तराखण्ड में राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस कार्यक्रम में अब तक राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस (एनडीडी) के 14 राउंड किये जा चुके हैं। पूर्व में अप्रैल माह में एनडीडी कार्यक्रम के अंतर्गत समस्त जनपदों में 34.84 लाख किशोर/किशोरियों को कृमि मुक्त किया गया।

बैठक में स्कूल शिक्षा विभाग, तकनीकी शिक्षा विभाग, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई), नवोदय विद्यालय समिति, राज्य जल एवं स्वछता मिशन, पेयजल विभाग उत्तराखण्ड, उत्तराखंड मदरसा बोर्ड, स्वच्छ भारत मिशन (एस.बी.एम.), आउटरीच ब्यूरो, श्रम विभाग, पचांयती राज विभाग सहित एविडेसं एक्शन के प्रतिनिधियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

बच्चों में कृमि मुक्ति के लिए अहम है एल्बेंडाजोल दवाई

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार भारत में 1 से 14 साल तक की उम्र के 22 करोड़ से भी अधिक बच्चों को कृमि संक्रमण का खतरा है। साथ ही भारत उन देशों में से एक है जहाँ कृमि संक्रमण और इससे संम्बन्धित रोग अधिक पाए जाते हैं।

कृमि संक्रमण की रोकथाम के लिए एल्बेंडाजोल दवाई का सेवन एक सुरक्षित, लाभदायक एवं प्रभावी उपाय है जो साक्ष्य आधारित और वैश्विक स्तर पर स्वीकृत है। उत्तराखंड में राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस कार्यक्रम विश्व स्वास्थ्य संगठन, राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र और एविडेंस एक्शन के तकनीकी सहयोग से आयोजित किया जाता है।एल्बेंडाजॉल डब्ल्यूएचओ द्वारा अनुमोदित दवा है जिसका उपयोग पूरे विश्व में बच्चों और किशोरों में आंत के कृमि संक्रमण को रोकने के लिए किया जाता है। कृमि एक परजीवी हैं जो मनुष्य के आंत में रहते हैं और जीवित रहने के लिए मानव शरीर के जरूरी पोषक तत्व को खाते हैं। कृमि संक्रमण भारत में एक प्रमुख जन स्वास्थ्य समस्या है और ये बच्चों और किशोरों की शारीरिक, मानसिक और शैक्षणिक विकास पर हानिकारक प्रभाव डालते हैं। इनसे अनीमिया और कुपोषण का भी खतरा है। नियमित डिवर्मिंग बच्चों और किशोरों में कृमि के संक्रमण को समाप्त कर, उनके शारीरिक और संज्ञानात्मक विकास में योगदान कर सकता है, और साथ ही जीवन की गुणवत्ता में सुधार कर सकता है।एल्बेंडाजोल टेबलेट सेवन के उपरांत कुछ बच्चों को हल्के पेट दर्द, उल्टी, जी मिचलना दस्त और थकान का अनुभव हो सकता है। ये दुष्प्रभाव आमतौर पर अस्थायी होते हैं और इन्हें आसानी से संभाला जा सकता है। चोकिंग (दवाई का गले में अटकना) एल्बेंडाजॉल का साइड इफेक्ट नहीं है और यह तब होता है जब टैबलेट को ठीक से चबाया या चूरा ना किया हो। राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस कार्यक्रम के दौरान किसी भी प्रतिकूल घटनाओं के प्रबंधन के लिए, उत्तराखण्ड में सशक्त आपातकालीन सहायता दल तैयार रहता है।

मौत करीब होने का संकेत देते है शरीर के ये 10 बदलाव

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 9 अगस्त , जिंदगी का दस्तूर है कि जिस व्यक्ति ने धरती पर जन्म लिया है उसका एक दिन अपने शरीर को छोड़कर दुनिया से जाना निश्चित है। और ये सभी जानते है कि मौत किसी को कभी बताकर नहीं आती। यदि व्यक्ति को अपनी मौत के बारें में पता लग जाए कि किस दिन मरने वाला है। तो वह इसे सोचकर ही घबरा जायेगा। पर यहां हम बता दें कि मौत भले ही बताकर नहीं आती लेकिन आने से पहले आपको कुछ संकेत जरूर देती है जिसे आप अनदेखा कर जाते है। आज हम आपको ऐसे ही कुछ संकेतों को बारें में बता रहे है जो मौत आने से पहले मनुष्य के शरीर में कुछ संकेत दिखने लगते है। तो जानें दिखने वाले इन संकेतों के बारें में...

1. मौत के करीब होनें पर आपके शरीर में होने वाले वदलाव पहले से इसका इशारा करने लगते हैं।जिसे हम इन्हे समझ नही पाते, और अनदेखा कर जाते है।

2. कभी भी किसी इंसान की अचानक मौत नहीं होती। बल्कि, मौत आने से पहले उसके शरीर में कई तरह के बदलाव आने शुरू हो जाते हैं जो उसने पहले कभी ना देखे हो और ना ही महसूस किए होते है।

3. जब इंसान की मौत का समय नजदीक आता है तो उस समय उसके सपनों में पूर्वजों का आना शुरू हो जाता है। सालों पहले मरे हुए पूर्वज उसके सपनों में नजर आने शुरू हो जाते हैं।

4. कहते हैं मृत्यु का समय नजदीक आने पर इंसान की परछाई भी उसका साथ छोड़ देती है। इसके अलावा गरूड पुराण में भी यही बताया गया है कि जब व्यक्ति का समय नजदीक आता है तो उसे अपने करीब बैठा इंसान भी नजर नहीं आता।

साभार - गूगल

5. जब मृत्यु का समय नजदीक आता है उस इसांन के शरीर में से एक अजीब से गंध आनी शुरू हो जाती है। यह गंध ऐसी होती है जिसे व्यक्ति पहली बार महसूस करता है।

6. कुछ मान्यताएं ऐसी भी है कि जब मृत्यु किसी इंसान के बिल्कुल नजदीक आती है उस समय व्यक्ति की नाक या तो टेड़ी होने लगती है या फिर दिखाई नहीं देती। कई ग्रंथों में भी इस बात का उल्लेख किया गया है कि मृत्यु के समय आदमी को अपनी नाक भी नहीं दिखाई देती।

7. मौत का समय नजदीक होने पर व्यक्ति को अपने हाथ की रेखाएं भी दिखनी बंद हो जाती हैं जो इस बात का संकेत करता है। कि उसका इस दुनिया से जाने का समय नजदीक है।

8. मृत्यु आने से पहले व्यक्ति के दिमाग में नकारात्मक विचार आने शुरू हो जाते हैं जिससे वो हर कार्य में महसूस करने लगता है। इसके साथ ही उसकी नाभी में भी हलचल शुरू हो जाती है।

9. मृत्यु आने से पहले व्यक्ति को अपने आस-पास किसी अदृश्य शक्ति के होने का अभास शुरू हो जाता है। उसे लगता है कोई व्यक्ति उसके आस-पास है जो किसी दूसरे को दिकाई नही देता।

10. मौत आने से पहले व्यक्ति के शरीर का रंग हल्का होने लगता है। और उसे रंगों के बीच का अंतर समझ नही आता। इस दौरान व्यक्ति कोचारों ओर सिर्फ काला रंग ही नजर आता है।

उत्तराखंड का पंगोट है वीकेंड के लिए बेस्ट, नेचुरल ब्यूटी के साथ लें बर्ड वॉचिंग का मज़ा

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट 09 अगस्त : वीकेंड को दिल्ली के किसी क्लब, बार या रेस्टोरेंट नहीं, बल्कि किसी शांत और सुकून वाली जगह जाकर बिताना चाहते हैं, तो पंगोट इसके लिए बहुत ही बेहतरीन डेस्टिनेशन है। जहां आप खुली हवा में सांस ले सकते हैं, नेचर को करीब से इंजॉय कर सकते हैं। इसके साथ ही अगर आपको बर्ड वॉचिंग और फोटोग्राफी का शौक है, तो उसे भी यहां आकर पूरा किया जा सकता है।पंगोट वैसे तो नैनीताल से सिर्फ 13 किमी दूर है। लेकिन ज्यादातर लोगों के उत्तराखंड की सैर नैनीताल, मसूरी तक ही सीमित होती है, जिस वजह से ये जगह अभी भी पर्यटकों की नजरों से दूर है। जिसके चलते यहां की खूबसूरती अभी भी बरकरार है। इस जगह आकर आप हरे-भरे जंगल और पेड़-पौधों पर चहलकदमी करते तरह-तरह के पक्षियों को देख सकते हैं। यहां 580 से ज्यादा पक्षियों की प्रजातियां मौजूद हैं। यहां तक पहुंचने के रास्ते में आपको कई तरह की हिमालयी पशु-पक्षियों की प्रजातियां भी देखने को मिल सकती हैं, जैसे कि लैमर-जियर, हिमालयन ग्रिफन, ब्लू-विंग्ड मिनाला, चित्तीदार और ग्रे फोर्कटेल, रूफ-बेल्ड वुडपेकर, रूफ-बेलिड नेल्टवा, तीतर, विभिन्न प्रकार के थ्रश आदि। ये जगह कई प्रकार के वनस्पतियों और जीवों के लिए बहुत ही अच्छी जगह हैं जिनमें तेंदुए, हिरण और सांभर शामिल हैं।

कुमाऊं क्षेत्र में स्थित, पंगोट का नजारा दिल छू लेने वाला है। मुक्तेश्वर - भीमताल - सत्ताल - नैनीताल, ये सारी जगहें पंगोट के बेहद नजदीक हैं, तो अगर आपके पास वक्त हो, तो आप इन जगहों की सैर का भी प्लान बना सकते हैं। - नैनीताल का मौसम हमेशा ही सुहावना होता है, तो आप पंगोट का प्लान साल में कभी भी बना सकते हैं। - पंगोट नैनीताल से 13 km की दूरी पर स्थित है जहां आप रोड ट्रिप का प्लान कर सकते हैं। वैसे बस से भी यहां तक पहुंचा जा सकता है।

सांकेतिक चित्र

इस बीमारी में अच्छा ख़ासा इंसान घास चरने लगता है

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 9 अगस्त , Boanthropy में मरीज़ स्वयं को गाय मानने लगता है , सुनने में यह बात अटपटी ज़रूर लगेगी मगर यह एकदम सच है ! कुछ इंसान एक विचित्र बीमारी से ग्रसित हो जातें हैं जिसे बोअनथ्रोपी/Boanthropy कहते है। बोअनथ्रोपी एक मनोवैज्ञानिक विकार है जिसमें एक मानव खुद को गोजातीय या फिर कहें गाय मानने लगता है। इसमें व्यक्ति, एक भ्रम की स्थिति में, खुद को एक बैल या गाय मानने लगता है और उसी के अनुसार जीने और व्यवहार करने का प्रयास करने लगता है।

साभार - सो.मी.

घांस तक चरने लागतें हैं इस बीमारी के मरीज़

इस स्थिति में, रोगी गाय की तरह चलने की कोशिश करने लगते है। वह ज़मीन पर ऐसे चलते हैं जैसे गाय अपने हाथ और पैरों का इस्तेमाल करके चलती है। वह सामान्य मनुष्यों की तरह बात करना बंद कर देते हैं और घास चरना पसंद करने लगते हैं। वह गाय जैसी ध्वनियाँ भी निकाल कर दूसरों का ध्यान अपनी ओर खींचतें हैं।अचानक वह एक स्वाद विकसित करते हैं और घास के लिए तरसते हैं। वह दिन भर बस गाय की तरह चरने में आनन्द पाते हैं और जो भी पौधे दिखें उन्हें खाने लगते हैं। बात यही ख़त्म नहीं होती। उनकी हालत यहाँ तक हो जाती है कि कभी कभी चारे की तलाश वह मवेशियों के झुंड में शामिल हो सकते हैं। व्यवहार, आहार से लेकर ध्वनियों तक, बोअनथ्रोपी के रोगी वास्तविक जीवन में गाय के चरित्र का चित्रण करने लगते हैं।

बोअनथ्रोपी/Boanthropy का कारण अभी भी अज्ञात है

बोअनथ्रोपी का कारण अभी भी अज्ञात है। कई लोग इसे धार्मिक धारणाओं से जोड़ते हैं जबकि अन्य लोग सोचते हैं कि यह जादू टोना और काले जादू से संबंधित है। विशेषज्ञों के अनुसार बोअनथ्रोपी अन्य मनोवैज्ञानिक बीमारियाँ जैसे सिज़ोफ्रेनिया और बाई पोलर डिज़ीज़ का एक अतिरिक्त पहलू भी हो सकता है। एक अच्छे खासे व्यक्ति hallucination या कहें मतिभ्रम में पड़ जाता है और उसी ऐसा प्रतीत होता है कि वह मनुष्य नहीं है।

कैसे किया जाता है इस बीमारी का उपचार

चूंकि अभी तक Boanthropy के कारणों को बहुत अच्छी तरह से परिभाषित नहीं किया गया है इसलिए कोई उपचार भी ठोस रूप से विकसित नहीं हुआ है। अगर किसी मानव को आप चरते हुए देखें और उसे रम्भाने की आवाज़ भी निकालते देखें, तो स्पष्ट है कि उन्हें चिकित्सा सहायता की आवश्यकता है। ऐसे में मनोचिकित्सक ऐसे में psycho-pharma-cotherapy को प्राथमिकता देते हैं ताकि किसी व्यक्ति को भ्रम की स्थिति से छुटकारा मिल सके। इसलिए यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं या आपका कोई दोस्त है जो गायों का शौकीन है, उसे घास खाने की लत लग रही हो है और उनके साथ अपना समय बिताना पसंद करता है तो बस याद रखें कि वह एक मनोवैज्ञानिक विकार से पीड़ित है।

पिथौरागढ़ : बंदीगृह की दीवार फांदकर फरार हुई नेपाल की युवती, ऐसे दिया पुलिस को चकमा

साभार - सो.मी.

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

पिथौरागढ़ 09 अगस्त : उत्तराखंड के पिथौरागढ़ से चौकाने वाली एक खबर सामने आरही है। यहां पर कोतवाली के सामने स्थित पुलिस बंदी गृह की 15 फीट दीवार फांद कर नेपाली मूल की युवती फरार हो गई है। बता दें कि युवती ने बड़ी चालाकी से भागने की प्लानिंग की। उसने साड़ी की रस्सी बनाकर वारदात को अंजाम दिया।आरोपी युवती को दो साल पहले चरस के साथ में गिरफ्तार किया था। फ़िलहाल पुलिस भागी हुई युवती की जांच पड़ताल में लग गई है। मिली जानकारी के अनुसार पिथौरागढ़ कोतवाली के ठीक सामने 60 लोगों की क्षमता का बंदी गृह स्थित है। यहां पर वर्तमान में 8 महिलाएं एवं 83 पुरुष रहते हैं। यहां पर एक 25 साल की युवती रह रही थी। बता दें कि उसको पुलिस ने 2 साल पहले चरस के साथ में गिरफ्तार किया था जिसके बाद से वह बंदी गृह में रह रही थी। हाल ही में रविवार तड़के सुबह तकरीबन 3:30 बजे वहां से फरार हो गई। उसने साड़ी की रस्सी बनाकर 15 फीट ऊंची दीवार फांद ली और उसी साड़ी से लटककर बंदी गृह की दीवार फांद कर फरार हो गई। बता दें कि फरार युवती की खोजबीन के लिए पुलिस ने अपनी टीमों को लगा दिया है और पुलिस की टीम में चेकिंग कर रही हैं। पिथौरागढ़ के एसपी लोकेश्वर सिंह ने बताया कि युवती को पकड़ने के लिए टीमें गठित की गई हैं और नेपाल सीमा पर भी अलर्ट जारी कर दिया है। उन्होंने कहा कि जल्द ही फरार युवती को पुलिस पकड़ लेगी।

संपादकीय

भारत विरोधी चीनी एजेंडा

यदि कोई भारत-विरोधी, देश को खंडित करने और देश के खिलाफ 'धुआं-रहित युद्ध' छेडने के अभियानों में संलिप्त है, तो बेशक वह 'देशद्रोही' है। उसके खिलाफ यूएपीए, राजद्रोह के कानून और अन्य धाराओं में केस चलाया जाना चाहिए। यदि भारत के खिलाफ किसी देश का एजेंडा है और वह दुष्प्रचार की साजिशें रच रहा है, तो उसके स्वदेशी दलालों, गद्दारों के खिलाफ भी आपराधिक मामले चलने चाहिए। अमरीका के प्रख्यात अखबार 'न्यूयॉर्क टाइम्स' ने कुछ साक्ष्यों और संदर्भों के साथ चीन के मंसूबों को बेनकाब किया है। यह अखबार भारत का हमदर्द भी नहीं है। हमारे देश के खिलाफ बहुत कुछ प्रकाशित होता रहा है, लेकिन अब चीन को नंगा करने वाले आलेख और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की छापेमारी के निष्कर्षों में बहुत कुछ समानताएं हैं, लिहाजा चीन का एजेंडा हमारा चिंतित सरोकार है। हालांकि ईडी ने कथित मीडिया वेबसाइट 'न्यूज क्लिक' पर छापे की कार्रवाई फरवरी, 2021 में की थी। छापे लगातार 5 दिन तक चले थे और कंपनी के 10 ठिकानों पर छापे मारे गए थे, जिनमें 38 करोड़ रुपए से अधिक की फंडिंग का खुलासा हुआ था। कुछ पैसा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के जरिए आया और अधिकांश राशि हवाला के जरिए भेजी गई। वेबसाइट के संस्थापक एवं संपादक प्रबीर पुरकायस्थ से भी करीब 11 घंटे तक पूछताछ की गई थी। तब वामदलों और कांग्रेस सरीखे दलों ने मीडिया कंपनी का बचाव किया था और ईडी की कार्रवाई को स्वतंत्र मीडिया और अभिव्यक्ति की आजादी पर हमला करार दिया था। अब 'न्यूयॉर्क टाइम्स' के आलेख से खुलासा हुआ है कि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी अमरीकी उद्योगपति नेविल रॉय सिंघम के जरिए भारत की मीडिया कंपनी को ही नहीं, बल्कि माओवादी गौतम नवलखा, सीपीएम के आईटी प्रकोष्ठ के बप्पादित्य सिन्हा, तीस्ता सीतलवाड़, उनके पति एवं बच्चों तथा ऐसे कई स्वतंत्र पत्रकारनुमा चेहरों को भी फंडिंग कराती रही है। कुछ पत्रकारों की जासूसी के आरोप में गिरफ्तारियां भी की गई हैं। नवलखा भीमा कोरेगांव दंगा केस में अब भी जेल में है। अखबार में छपे आलेख से खुलासा हुआ है कि चीन अफ्रीकी राजनीतिक दलों, गैर लाभकारी संगठनों और तीसरी दुनिया के देशों के कथित पत्रकारों की भी फंडिंग करता रहा है। अमरीकी नेविल रॉय मूलतः श्रीलंका का है और आजकल चीन के शंघाई शहर में रहता है। उसे चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की प्रचार मशीनरी का एक अंतरंग हिस्सा माना जाता है। वह खुद को 'कम्युनिस्ट' कहलाना पसंद करता है। चीन की फंडिंग कुछ अमरीकी कंपनियों और ब्राजील की एक कंपनी के जरिए की गई है, जिसे 'न्यूज क्लिक' में विदेशी निवेश दिखाया गया है।

दैनिक न्यूज़ वायरस

संपादक : मौ.सलीम सैफी, कार्यकारी संपादक : आशीष कुमार तिवारी न्यूज़ वायरस नेटवर्क प्रा. लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक मौ.सलीम सैफी द्वारा विश्वनाथ प्रिंटर्स, अजबपुर कलां, देहरादून से प्रकाशित एवं न्यूज़ वायरस नेटवर्क प्रा. लिमिटेड, 48/3 बलबीर रोड, डालनवाला, देहरादून से मुद्रित। **फ़ोन :** 0135-4066790, 2672002 **RNI No. :** UT-THIN/2012/44094 **Cert. Ser. No. :** 31406 **E-mail :** dainiknewsvirus@gmail.com **Website :** www.newsvirusnetwork.com **YouTube :** TV News Virus

न्याय क्षेत्राधिकार : जनपद देहरादून (उत्तराखंड), भारत

जान लीजिए रायफल, गन और बंदूक में क्या है अंतर

साभार - सो.मी.

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 9 अगस्त , अक्सर हम अपने जीवन में रिवॉल्वर, रायफल और गन जैसे शब्दों से रूबरू होते रहते हैं। अक्सर सुनते हैं गन, जिससे हम बचपन में खेलकर आए हैं। लेकिन असल जिंदगी में असल के ये हथियार बेहद खतरनाक होते हैं। एक तरफ जहां ये सुरक्षित रखते हैं तो दूसरी तरफ कुछ पल में ही किसी जान लेने के लिए भी काफी हैं। रायफल की बात करें तो रायफल दुनिया का सबसे खतरनाक हथियार है। इसकी श्रंखला समंदर की तरह है। रिवॉल्वर लोग अपनी सुरक्षा के लिए इस्तेमाल करते हैं।

क्या होती है राइफल

राइफल दुनिया का सबसे खतरनाक शस्त्र मानते हैं। राइफल भी Breech-Loaded यानी पीछे से गोलियां भरे जाने वाले हथियार होते हैं। इसे कंधे पर रखकर फायर करने को कहा जाता है। राइफल की मारक क्षमता 300 मीटर होती है। इसके बैरल यानी नाल में एक तरह का खांचा होता है। शुरू में राइफल को एक बार गोली दागने वाले हथियार के रूप में विकसित किया गया थाय लेकिन समय के साथ इसमें काफी बदलाव आया और अब कई राउंड की गोलियां दागने वाले राइफल मौजूद हैं। इसी में से एक है असॉल्ट राइफल, जो एक साथ कई राउंड गालियां दाग सकता है। दुनिया में रायफल की तमाम श्रंखलाएं है।

गन यानी बंदूक

गन एक आर्टिलरी हथियार है। इसका दायरा काफी व्यापक है। इसमें टैंक गन (tank guns) और कैनन (cannons) और हॉवित्जर (howitzers) जैसे आर्टिलरी गन शामिल हैं। गन Breech-Loaded यानी पीछे से गोलियां भरे जाने वाले हथियार होते हैं। ये एक मिनट में 700 गोलियां दागती है। इनकी मारक क्षमता 1 किमी तक रहती है। ये सीधे बेहद तेज गति से फायर करते हैं। गन का इस्तेमाल आम तौर पर लंबी दूरी की फायरिंग के लिए की जाती है। कई तरह के गन आते हैं। इसी में शामिल हैं मशीन गन, शिकार के लिए हंटिंग और ट्रेनिंग व मनोरंजन के लिए अन्य गन। विशेषज्ञ छोटे और हाथ पकड़े जाने वाले हथियारों को गन नहीं मानते हैं। क्योंकि इनको किसी एक व्यक्ति के इस्तेमाल के अनुसार बनाया जाता है। इन्हें हम पिस्तौल के नाम से जानते हैं।

राइफल और गन में अंतर

गन ऐसा फायर आर्म्स है, जिसमें मेटल ट्यूब होता है, उससे बेहद तेज गति से गोली दागी जाती है। दूसरी तरह राइफल एक ऐसा फायर आर्म्स है, जिसमें लंबी नली (Barrel) होती है।इससे दागी जाने वाली गोली घुमते हुए लक्ष्य को ज्यादा सटीक तरीके भेदती है। गन की डिजाइन, एक समूह द्वारा इस्तेमाल करने की जरूरत को ध्यान में रखकर की गई है। जबकि राइफल की डिजाइन एक व्यक्ति के हिसाब की गई है। गन का इस्तेमाल टैंक, आर्टिलरी और खुली जंग में किया जाता है वहीं राइफल का इस्तेमाल शार्पशूटर करते हैं। मोर्टार्स, कैनन, मशीन गन, टैंक गन, होवित्जर और गैटलिंग गन ये सभी गन के प्रकार हैं। जबकि एके-47 और एम16 ऑटोमेटिक राइफल के प्रकार हैं।

डॉ. पंकज पांडे की टीम पीडब्ल्यूडी ने जितेंद्र त्रिपाठी के नेतृत्व में देहरादून की क्षतिग्रस्त सड़कों पर ट्रैफिक हुआ बहाल

प्रांतीय खंड लोनिवि देहरादून की शानदार कार्यशैली का उम्दा प्रदर्शन

डॉ. पंकज पांडे सचिव, पीडब्ल्यूडी

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून, 8 अगस्त। लगातर हो रही भारी बारिश के चलते क्षतिग्रस्त हुई ज्यादातर सड़कों पर यातायात बहाल कर दिया गया,उत्तराखंड लोक निर्माण विभाग के सचिव डॉ. पंकज पांडे न केवल लगातार हालत पर नजऱ बनाए हुए है बल्कि टीम पीडब्ल्यूडी को नियमित उचित दिशा निर्देश दे रहे है ताकि आम जनता को कोई दिक्कत परेशानी न हो। डॉ.पंकज पांडे से मिले निर्देशों के क्रम में देहरादून लोक निर्माण विभाग के अधिशासी अभियंता जितेंद्र त्रिपाठी की मुस्तैदी से ज़िले की ज्यादातर क्षतिग्रस्त सड़के आवाजाही के लिए खोल दी गई है।

पीडब्ल्यूडी के अधिशासी अभियंता जितेंद्र त्रिपाठी दिनरात अपने इंजीनियरों की टीम और ठेकेदारों को अलर्ट मोड पर रखे हुए है एक एक सड़क को जल्द से जल्द शुरू करने में काफ़ी तेज़ी दिखा रहे है,कुल 36 मार्ग अतिवृष्टि से प्रभावित हुए हैं। इसमें से 10 मार्ग मंगलवार को बंद हुए थे जिसमें से 8 मार्ग खोले जा चुके हैं।

एक मार्ग सहस्त्रधारा चामासारी के किमी 5 में 60 मीटर लंबाई में मार्ग ध्वस्त हो गया है जिसे 12 अगस्त तक खोलना लक्षित है और सहस्त्रधारा कार्लीगाढ सरोना को बुधवार 9 अगस्त तक खोल दिया जायेगा।

जितेंद्र त्रिपाठी के नेतृत्व में प्रांतीय खंड लोनिवि देहरादून द्वारा मार्गो को खोलने के लिए कुल 13 जेसीबी एवं 1 पॉकलैंड सहित 14 मशीने कार्य पर लगायी गई हैं, जो दिन रात काम कर रही है

भारी बारिश के चलते हुई थी सड़कें क्षतिग्रस्त